Dr. Bhushan Kumar singh.
Asst. Prof.
Deptt of Commerce
JSR. Co-operative college JSR.

Sub:- Financial Management.

Topic- Differ from traditional and Modern financial Management

B. Com Vth sem (Hons)

Scanned by CamScanner

* वित्तीय प्रबन्ध से आप क्या समझते हैं? आधुनिक वित्तीय प्रबन्ध परम्परागत वित्तीय प्रबन्ध से किस प्रकार भिन्न है?
What do you understand by financial management? How does modern financial management differ from traditional financial management?

Ans:- Finance is an integral part of modern economic life and occupies an important place in all economic activities. Economic growth virtually rests to a considerable extent on the availability of adequate and timely finance. It is finance which brings together various segments of an organisation and transforms them into an integrated whole so as to they work smoothly and move in the direction of achieving the organisation goals. That is why finance has been called the backbone of business activities. In fact, finance is a process of transforming accumulated savings into productive use.

वित्तीय प्रबन्ध की परिभाषा (Definition of Financial Management)

According to Prof. Bradley. वित्तीय प्रबन्ध, व्यावसायिक प्रबन्ध का वह क्षेत्र है, जिसका सम्बन्ध पूंजी का सम्यक प्रयोग एवं पूंजी के साधनों के सतर्कतापूर्ण चयन से है, ताकि व्यवसाय को इसके उद्देश्यों की पूर्ति की दिशा में निर्देशित किया जा सके।

An Analysis of the above definition reveals four essentials of financial management:

(i) Firstly, it is one of the four distinct areas of overall business management, that is production, finance, personnel and marketing.

(ii) Secondly, one of the broad functions of this area is a judicious or rational use of capital resources - a function which is related to a very vital aspect of business operations, that is, the proper allocation and utilisation of funds.

(iii) Thirdly, the other broad function is a careful selection of sources of capital out of so many sources available in the capital market. In other words, it involves determining the debt-equity ratio and designing a proper capital structure for the corporate organisation and

(IV) Fourthly, The operations are to be conducted in such a way so that the organisation moves towards attainment or achievement of its basic goals or objectives. it is well-known that the basic goals of business are financial in nature, i.e. - 'Profit maximisation' or 'wealth maximisation.'

वित्तीय प्रबन्ध - विज्ञान अथवा कला ?

Financial management science or Art ?

वित्तीय प्रबन्ध न तो शुद्ध विज्ञान है न ही कला। यह बहुत सारी तकनीके तथा तरीकों के बारे में बात करता है, जो व्यवसाय तथा निर्णय के उद्देश्यों की स्थिति के ऊपर निर्भर करता है।

वित्तीय प्रबन्ध से सम्बन्धित परम्परागत एवं आधुनिक विचारधारा (The Traditional and Modern Approach of financial Management)

परम्परागत विचारधारा (Traditional Approach) :-

Traditional Approach के अन्तर्गत विषय का अध्ययन प्रमुख रूप से कोषों की व्यवस्था (procurement of funds) करने तथा समय समय पर आवश्यकतानुसार कतिपय अन्य कार्यों को सम्पन्न करने तक ही सीमित था। परम्परागत विचारधारा के कुछ लक्षण निम्नलिखित है - (i) इसमें पूँजी प्राप्ति के साधनों (Instruments), संस्थागत स्रोतो (Institutions) तथा प्रचलित व्यवहारों (Current Practices) को अधिक प्रमुखता प्रदान की जाती थी। (ii) इसके अन्तर्गत ऐसे प्रकरणों का अध्ययन किया जाता था जिनका सम्बन्ध दैनिक व्यवसाय संचालन से न होकर यदाकदा उत्पन्न होने वाली कतिपय समस्याओं से होता था; जैसे - कम्पनी प्रवर्तक, प्रतिभूतियाँ, पूँजी बाजार, पुनर्संगठन, एकीकरण, समविलयन आदि।

(iii) यह समस्त अध्ययन विनियोक्ता के दृष्टिकोण (Investor's Point of view) का परिचायक था जिससे ऐसा प्रतीत होता था कि वित्तीय प्रबन्ध का प्रयोजन आन्तरिक प्रबन्ध से न होकर बाहरी व्यक्तियों (पूँजी लगाने वाले व्यक्तियों, बैंकरो, वित्तीय संस्थाओं) के मार्गदर्शन के लिए अधिक था।

(iv) यह मुख्यतया जो आवश्यकतानुसार कभी-कभी इसका प्रयोग संस्था के जीवनकाल में किया जाता था।

Scanned by CamScanner

(v) इसकी निर्णयन प्रक्रिया में कोई भी सहभागिता नहीं थी, इसकी फलस्वरूप जैसे ही वित्त को प्राप्त कर लिया जाता था, इसकी आवश्यकता कम हो जाती है।

(vi) आधुनिक तकनीकों व वित्तीय विश्लेषण के कौशल अभाव में निर्णय मुख्यतया भूतपूर्व अनुभव के आधार पर लिये जाते थे।

(vii) परम्परागत विचारधारा की प्रकृति अर्थात् अपरिवर्तनशील थे।

आधुनिक विचारधारा (The modern Approach) :-

अब इस दृष्टिकोण में मूलभूत परिवर्तन हो चुका है। आधुनिक विचारधारा के अन्तर्गत वित्तीय प्रबन्ध, व्यावसायिक प्रबन्ध का एक अभिन्न अंग बन गया है। जिसका सम्बन्ध व्यवसाय के आन्तरिक संचालन से अधिक है।

अतः वित्तीय नियोजन, नियन्त्रण तथा कार्य - निष्पादन की नवीन विधियों एवं तकनीकों का विकास हुआ जिन्होंने व्यावसायिक वित्त को नये आयाम प्रदान किये जिनका सम्बन्ध कोषों के प्रभावपूर्ण एवं कुशलतापूर्वक उपयोग से है।

अति आधुनिक रूप में वित्त का कार्य उच्च स्तर पर नीति निर्धारण एवं प्रबन्धकीय निश्चयीकरण से अधिक जुड़ गया। इसके अन्तर्गत कोषों के अनुकूलतम उपयोग (optimal use) की दशा में विवेकपूर्ण निर्णय लिये जा सकते हैं। इस सन्दर्भ में दीर्घकालीन वित्तीय नियोजन, कोषों के वैकल्पिक उपयोगों का मूल्यांकन, पूंजी बजटिंग, व्यवसाय की वित्तीय सफलता के मापदण्डों का निर्धारण, पूंजी की लागत तथा कार्यशील पूंजी के प्रबन्ध आदि इस विषय के प्रमुख अंग बन चुके हैं।

परम्परागत एवं आधुनिक विचारधाराओं में अन्तर
Difference between Traditional & Modern approach

इन दोनों [redacted] (विचारधाराओं में अन्तर स्पष्ट करते समय निम्नांकित बिन्दुओं को ध्यान में रखना अति आवश्यक होता है।

(1) परम्परागत विचारधारा वर्णनात्मक (Descriptive) तथा संकुचित (Narrow) थी, जबकि आधुनिक विचारधारा विश्लेषणात्मक (Analytical) एवं अधिक व्यापक (Wider) है।

Scanned by CamScanner

(2) परम्परागत विचारधारा के अन्तर्गत वित्तीय प्रबन्ध एक sporadic कार्य था, जबकि आधुनिक विचारधारा के अनुसार यह अनवरत (Continuous) तथा नियमित (Regular) कार्य है।

(3) निश्चयीकरण की प्रक्रिया में पहले इस क्षेत्र की सक्रिय भूमिका (Active Role) नहीं थी जबकि अब वित्तीय प्रबन्ध के क्षेत्र को महत्वपूर्ण भूमिका (Key Role) प्राप्त है। इसलिए अब यह एक प्रासंगिक कार्य न रहकर एक प्रशासनिक कार्य (Administrative Function) बन चुका है।

(4) पहले कोषों की उपलब्धि (Procurement of Funds) पर अधिक ध्यान दिया जाता था, जबकि अब उसके साथ - साथ कोषों के सम्यक् उपयोग (Judicious use of funds) पर भी उतना ही ध्यान दिया जाता है।

(5) पहले प्रबन्धकीय निर्णयन के आधार अन्तरप्रेरणा (Intuition) तथा अनुभव (Experience) थे किन्तु अब निश्चयीकरण के लिए वैज्ञानिक विश्लेषण (Scientific Analysis) की आधुनिक प्रविधियाँ (Modern Techniques) का प्रयोग किया जाता है।

(6) परम्परागत दृष्टिकोण इस बात पर अधिक ध्यान देता था कि बाहरी व्यक्ति आन्तरिक प्रबन्ध को किस नजरिये से देखते हैं (Outsider looking in Approach) जबकि आधुनिक विचारधारा इस बात पर बल देती है कि आन्तरिक प्रबन्ध बाहरी दशाओं के परिप्रेक्ष्य में किस प्रकार अपनी वित्तीय नीतियों के निर्धारण एवं वित्तीय-प्रशासन का कार्य सम्पन्न करता है।

(7) परम्परागत विचारधारा के अन्तर्गत वित्त के दीर्घकालीन कोषों के प्रबन्ध पर अधिक बल दिया जाता था, जबकि अब कार्यशील पूँजी के प्रबन्ध एवं अल्पकालीन कोषों के प्रबन्ध के साथ-साथ वित्तीय प्रबन्ध के अनेक नवीन आयामों पर भी उतना ही ध्यान दिया जाता है, जैसे :- पूँजी की लागत, पूँजी बजटिंग आदि।

—x—

Scanned by CamScanner